# बार बालाओं को नचा कर भीड़ एकत्र करते कृष्णपाल

# आखिर अपनी औकात पर आ ही गये नेतागण

**फ़रीदाबाद ( म.मो. )** पूरे पांच साल लूट मचाने व अपनी जायदादें बनाने के सिवा कोई सार्वजनिक काम न करने की वजह से आज स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर की बात तक सुनने को कोई तैयार नहीं है। गांवों के लोग उन्हें अपने गांवों में घुसने तक नहीं दे रहे हैं। कहीं, जैसे-तैसे घुस भी जाते हैं तो कोई सुनने को उनकी सभा में रुकता नहीं है। इसका उपाय कृष्णपाल को बार-बालाओं में नज़र आया। अपनी चुनावी सभा में जनता को रोके-रखने व भीड़ को आकर्षित करने के लिये उन्होंने बार-बालाओं को नचाना शुरू कर दिया है। पलवल इलाके के एक गांव में हुए इस तरह के आयोजन की वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है। इसी नाच-गान के दौरान कृष्णपाल को मंच पर ही नकद रुपये भी दिये गये जिन्हें माथे को लगा कर उन्होंने अपनी जेब में डाल लिया।

**ग्रामीणों को सुंदरियों के जाल में फ़ांसने के लिये कृष्णपाल ने योजना बनाई थी कि नाच-गानों के चक्कर में जब भीड़ जुट जायेगी तो वे जमी-जमाई भीड़ को अपना भाषण आसानी से पिला देंगे। योजनानुसार जब वे भाषण देने पहुंचेंगे तो नाचने वालियों को अगले गांव भेज देंगे; जब वहां भीड़ जुट जायेगी तो वे वहां पहुंच जायेंगे। लेकिन जनता बहुत सयानी हो चुकी है। नाच-गाना समाप्त करके ज्योंहि नाच मंडली चलने लगती भीड़ भी उठ कर चल देती। कई जगह ऐसा होने पर कृष्णपाल को समझ आ गया कि यह जनता है सब जानती है।**

अकेले कृष्णपाल ही क्या, दिल्ली के भाजपाई भौंपू मनोज तिवारी की भी यही स्थिति है। वैसे तो वे खुद भी पांच साल तक दिल्ली की जनता को अपने घटिया गायन से बोर करते रहे थे, इसलिये अब उनके गायन में इतना आकर्षण नहीं बचा था कि जनता उन्हें सुनने आये। इसलिये उन्होंने सपना चौधरी के ठुमके लगवाने के लिये मंच सजाया था। जो लोग मनोज तिवारी को सुनने नहीं आना चाहते थे वे सपना चौधरी के लिये इतनी बड़ी संख्या में पहुंच गये कि सम्भालना मुश्किल हो गया। इससे पहले कि मनोज तिवारी अपना जहरीला भाषण उगलते भीड़ बेकाबू हो गयी और पुलिस को अच्छा-खासा लाठी चार्ज करना पड़ा। जाहिर है ऐसे में वोट तो कहां से मिल पायेंगे ?

आज का वोटर इतना सयाना है कि खुल कर बात नहीं करता। किसी को नहीं बताता कि वह किस को वोट देगा। हर वोट मांगने वाले को हां कर के टाल देता है। परन्तु बेचारे कृष्णपाल के साथ ऐसा नहीं हो रहा। उन्हें तो कोई झूठी हां भी नहीं भरता, सीधे मना कर देते हैं कि उन्हें वोट नहीं देंगे। बार-बार इस तरह का व्यवहार एवं जवाब सुन कर कृष्णपाल का चिढना और चिढ कर अनाप-शनाप बोलना व सत्ता का गुरूर दिखाना स्वाभाविक है। इस से उनकी रही-सही बात और बिगड़ जाती है, जो 2-4 जने चुप-चाप वोट देने वाले होते भी हैं, वे भी बिगड़ जाते हैं।

जनता के सवालों का कोई वाजिब जवाब न देने पर कृष्णपाल प्रधानमंत्री मोदी का सहारा लेते हैं। वे मोदी को पुन: प्रधानमंत्री बनाने के लिये वोट मांगते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें अपने लिये नहीं मोदी के लिये वोट चाहिये।

मोदी की आड़ लेने वाले अकेले कृष्णपाल ही नहीं हैं बल्कि तमाम भाजपाई उम्मीदवार यही कह और कर रहे हैं, क्योंकि काम तो किसी ने भी अपने क्षेत्र में कोई किया नहीं। सबने नारियल ही फ़ोड़े हैं या फ़िर गौ-रक्षक दल बना कर लूट-मार की है या हिन्दू-मुस्लिम के मुद्दे उठा कर लोग़ों को पाकिस्तान भेजने की बात की है। यहां सवाल यह भी पैदा होता है कि जिस मोदी के नाम पर वोट मांग रहे हैं, उसने ही क्या कर दिया ? 2014 के चुनाव में न तो पाकिस्तान कोई मुद्दा था और न ही सुरक्षा। उस वक्त मोदी ने जिन मुद्दों पर वोट मांगे थे उनका तो अब वे कोई ज़िक्र तक भी नहीं करते और जो काले कारनामे-नोटबंदी, जीएसटी, शिक्षा, चिकित्सा व बेरोजगारी वाले काम किये हैं, उन पर भी वे कोई बात नहीं करते। और फ़िर यदि सब कुछ मोदी ने ही करना है तो बाकी लोग़ों को चुनाव लड़ने की जरूरत क्या है, सभी सीटों से मोदी को ही लड़वा दो। यदि ऐसा हो जाय तो फ़िर कृष्णपाल जैसे भ्रष्ट मंत्री कैसे बनेंगे ?

मामा श्री ने जो पांच साल चमड़े के सिक्के चलाये थे वे कैसे चलेंगे ? हज़ारों करोड़ की जो जायदादें इन पांच सालों में बना डाली वे कैसे बनती ? फ़िर यदि मोदी के नाम पर ही वोट लेने हैं तो हर बार कृष्णपाल ही चुनाव क्यों लड़े किसी और को भी सेवा करने को मौका मिलना चाहिये।

## कृष्णपाल की बधिया बैठाने का कोई मौका नहीं चूक रहा बसपा विधायक टेक चंद

**बल्लबगढ ( म.मो. ) पृथला क्षेत्र से बसपा की टिकट पर चुनाव जीत कर विधायक बना टेक चंद लूट-कमाई व क्षेत्र में दादागिरी चमकाने के इरादे से भाजपाई खट्टर सरकार की गोद में आ बैठा और खूब जम कर पांच साल तक लूट-कमाई करी। कोई गांव ऐसा नहीं छोड़ा जहां की पंचायत को मिलने वाली सरकार ग्रांट में सेंधमारी न की हो। इतना ही नहीं पंचायती पैसे से गांवों में होने वाले हर काम के ठेकेदार से भी पूरी सांठ-गांठ रख कर ग्रामीणों को चूना लगाया।**

**अब वक्त आया लोकसभा चुनाव का तो भाजपा को अपने प्रत्याशी कृष्णपाल गूजर के लिये इसके सहयोग की जरूरत आन पड़ी। अब टेक चंद के लिये यह तो मुमकिन नहीं कि जिस पार्टी के दम पर पांच साल तक लूट-मार की हो, उसका साथ छोड़ दें; इसलिये पार्टी का साथ देने के नाम पर वह प्रचार तो कर रहा है, भाषणबाज़ी तो कर रहा है, परन्तु ऐसा कोई मौका नहीं छोड़ता जिसमें कृष्णपाल की बधिया बैठती हो। बीते सप्ताह क्षेत्र की एक जनसभा में भाषणबाज़ी के बाद लोग़ों से कहा कि ''हाथी का बटन दबाना।'' बेशक, तुरंत ही उसने अपने ये शब्द वापस लेते हुए कमल का बटन दबाने की बात भी कह दी, लेकिन इससे उसके मन के भीतर छिपी हकीकत तो एक बारगी सामने आ ही गयी।**

**इसी सप्ताह बघोला की एक सभा को उखाड़ने में भी इस विधायक ने अपनी ओर से तो कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी थी लेकिन मौके पर उपस्थित नयनपाल रावत ने अपनी सूझ-बूझ से उखड़ती सभा को फ़िर से जमा दिया। हुआ कुछ यूं था कि इस विधायक ने गांव बघोला के सरपंच को आदेश दिया था कि वह गांव में चुनाव प्रचार करने आ रहा है उसके लिये जनसभा आयोजित करे। लेकिन जब यह साहब पहुंचा तो वहां बमुश्किल 15-20 लोग ही मौजूद थे और सरपंच भी दूर से टहलता हुआ आता नज़र आया। बस फ़िर क्या था, टेक चंद का पारा मोदी से भी ऊंचे आसमान पर, लगा सरपंच को गालियां देने जैसे कि सरपंच उसका गुलाम हो। सरपंच उसके किसी अहसान तले तो दबा था नहीं, हर पंचायती काम के लिये टेकचंद की सेवा-पानी करता था, लिहाजा सरपंच भी उसे टका सा जवाब देकर चलता बना। खेल बिगड़ता देख नयनपाल रावत जो भाजपाई टिकट पर चुनाव लड़ कर 500-700 वोटों से टेक चंद से हारे थे, ने मोर्चा संभाला। रावत बेशक विधायक नहीं हैं परन्तु क्षेत्र के तमाम गांवों में उनकी साफ़-सुथरी छवि के चलते ग्रामीण उनकी काफ़ी इज्जत करते हैं। परिणामस्वरूप सरपंच व तमाम ग्रामीण न केवल रुक गये बल्कि बड़ी संख्या में और भी लोग सभा में आ जुटे। टेक चंद की इन ऊल-जुलूल हरकतों को देखते हुए कई लोग यह भी मानने लगे हैं कि टेक चंद विपुल गोयल से मिलकर भीतर ही भीतर कृष्णपाल की जड़ काटने में जुटा है।**

## जीतेंगे.....बेशक ईवीएम के दम पर सही....

**इस** चुनाव में ईवीएम को लेकर लगातार अफवाहें जनता तक पहुँच रही हैं कि कैसे भाजपा ईवीएम् में गड़बड़ी करके चुनाव जीत रही है। कुछ जगहों से खबर भी आ रही है कि कई स्थानों पर ईवीएम् में गड़बड़ी पायी गई है तो कुछ पोलिंग बूथ के कर्मियों पर आरोप भी लगे हैं कि जबरन वोट किसी भाजपा को डलवा दिए।

इन अफवाहों को सभी दल अपने-अपने हिसाब से भुनाने में लगे हैं। कुछ दलों ने लोकतंत्र बचाने की दुहाई तक दे डाली। पर क्या जिस जनता से लोकतंत्र बचाने की उम्मीद कर रहे हैं वो सच में इसको बचाना चाहती है ? क्या हम एक जनता के तौर पर लोकतान्त्रिक हैं ?

जयनारायण मिश्र बनारस के रहने वाले हैं और दिल्ली में डीएसए का काम करते हैं। बैंकों की दशा बहुत खराब है ऐसा वो मानते हैं और पिछले 10 साल में इतने बुरे हाल कभी नहीं थे। पर इन सबके लिए वो मोदी सरकार को जिम्मेवार नहीं मानते और वो चाहते हैं कि मोदी कैसे भी जीते पर जीते। मिश्र ने बताया कि इस बार 200 सीटें भी आ जायें एनडीए की तो बढ़ी बात होगी। पर उनका विश्वास है कि जनता भाजपा का साथ दे न दे पर ईवीएम् जरूर भाजपा को जीतायेगी। यही कारण है कि अमित शाह बहुत निश्चिन्त दिख रहा है इस बार भी। इसी तरह आशु, संजीव और सुप्रिया भी मानते हैं कि ईवीएम् की सेटिंग से भाजपा ही जीतेगी और ऐसा कहने में संकोच भी नहीं है उन्हें। सुप्रिया ने कहा कि युद्ध में जीतना जरूरी है चाहे कैसे भी जीतो। अगर बूथ कर्मी मोदी का समर्थक है तो उसको हक है कि वो अपने विचार रखे। जब विरोधी अपने विचार रख रहा है तो सिर्फ वो एक सरकारी काम में है तो क्या उसकी अभिव्यक्ति की आजादी समाप्त हो जाती है ? ऐसे तर्कों से अपने आप को संतुष्ट करने वाले ये नवयुवक हमारे देश का भविष्य हैं।

लोकतंत्र और हिटलर, तानाशाही जैसे शब्दों की दुहाई देने वाले विपक्षी नेताओं को जमीनी हकीकत भी जाननी चाहिए कि जिस लोकतंत्र को बचाने का ढोंग वो कर रहे हैं उसको बचाने में जनता की दिलचस्पी कितनी है। अगर होती तो ईवीएम् सेटिंग जैसे मसले पर आक्रोशित होकर सवाल पूछते कि चुनाव आयोग इसपर उचित सफाई दे और एक निष्पक्ष चुनाव कराने का जनता को भरोसा दिलाये।

**ये जानना अति दुखद है कि जिस आजादी और लोकतंत्र के लिए लाखों लोगों ने अपनी जान गँवाई उसको हराने के लिए हम खुद आज किसी भी स्तर पर जाने को तैयार बैठे हैं। जयनारायण मिश्र जैसे लोगों को इस बात से खुशी है कि एक आदमी के लिए सारे तंत्र को यदि कुर्बान करना है तो भी अच्छा है। ये माहौल कितना खतरनाक है, समझा जा सकता है। बशर्ते समझ पाने की शक्ति बची हो तो।**

**- साइबर नजर**

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06